

गुरुकुल से विश्वविद्यालयः भारतीय शिक्षा प्रणाली का कालिक विकास

बीज शब्द :

गुरुकुल प्रणाली, सतत विकास, पारम्परिक कृषि, जल संरक्षण, औषधीय पौधे, भारतीय शिक्षा परम्परा

प्राचीन भारतीय गुरुकुल प्रणाली एक महत्वपूर्ण अंग था, जिसका उद्देश्य केवल पौधों का पालन - पोषण नहीं है बल्कि प्रकृति के साथ तालमेल, जीवन का निर्माण था। गुरुकुलों में बागवानी को "प्रकृति संपोषण" के रूप में पढ़ाया जाता था, विद्यार्थी पौधों की बनावट, मिट्टी की गुणवत्ता, जल संचय, औषधीय पौधों, फल-फूल उत्पादन और पर्यावरणीय संतुलन का ज्ञान प्राप्त करना होता था, एक शिष्य को सिखाते थे कि पौधे जीवित अंश हैं और उनकी देख-भाल मनुष्य के जीवन में एक महत्वपूर्ण घटक हैं, औषधीय पौधे का उपयोग जैविक खाद का निर्माण, जल संचयन तकनीक, और प्राकृतिक खेती जैसे सिद्धांत गुरुकुल प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ थीं।

आज की आधुनिक बागवानी शिक्षा में जहाँ वैज्ञानिक तकनीक, उन्नत किस्मों, ग्रीनहाउस और फर्टिगेशन जैसी विधियाँ शामिल हैं, वहीं गुरुकुल परंपरा पर्यावरण संतुलन, प्रकृति अनुकूल खेती, जैविक उत्पादन और सतत कृषि के सिद्धांत प्रदान कराती है मेरा उद्देश्य है कि बागवानी शिक्षा में गुरुकुल आधारित दृष्टिकोण न केवल ऐतिहासिक महत्व रखता है बल्कि आज के समय में टिकाऊ खेती के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। यह दृष्टि कोण विद्यार्थियों को पर्यावरण संवेदी, तकनीक - संवेदी और प्रकृति के अनुरूप बागवानी की ओर खींचती हैं।

शालिनी वर्मा

शोधार्थी

डॉ० शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ० अंजलि सिंह

प्रोफेसर

डॉ० शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ

गुरुकुल से विश्वविद्यालयः भारतीय शिक्षा प्रणाली का कालिक विकास

परिचय

भारत की शिक्षा परंपरा सदैव प्रकृति-केंद्रित रही है। प्राचीन काल से गुरुकुलों में विद्यार्थियों को न केवल आध्यात्मिक और दार्शनिक ज्ञान दिया जाता था, बल्कि जीवनोपयोगी कौशल जैसे कृषि, पशुपालन, और बागवानी की शिक्षा भी प्रदान की जाती थी। बागवानी को भारतीय ग्रंथों में "उपवन विज्ञान", "वृक्षायुर्वेद" और "वनस्पति-विद्या" के रूप में जाना गया है। चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, काशी कृषि-शास्त्र और वराहमिहिर के ग्रंथों में बागवानी की विभिन्न विधियों का वर्णन मिलता है। गुरुकुल प्रणाली में बागवानी का उद्देश्य सिर्फ फल, फूल या औषधियाँ उगाना नहीं था, बल्कि प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और विद्यार्थियों में श्रम, अनुशासन, सेवा तथा जिम्मेदारी जैसी गुणों का विकास करना भी था।

1. गुरुकुल शिक्षा प्रणाली और बागवानी का संबंध

1.1 प्रकृति-केंद्रित शिक्षा का आधार

गुरुकुल प्रणाली में विद्यार्थियों का अधिकांश समय प्राकृतिक परिवेश में बीतता था। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य प्रकृति को समझना और उसके नियमों के अनुरूप जीवन जीना था। बागवानी इस प्रक्रिया का व्यावहारिक अंग थी, क्योंकि पौधों की देखभाल करने से विद्यार्थियों में धैर्य, सूक्ष्म अवलोकन और पर्यावरण-संबंधी संवेदनशीलता विकसित होती थी।

1.2. बागवानी का आध्यात्मिक महत्व

गुरुकुल परंपरा के अनुसार—“वृक्ष मानव के समान जीवधारी हैं।”

इसलिए बागवानी को सेवा, दान और तप का स्वरूप माना जाता था। विद्यार्थी यह सीखते थे कि पौधे पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश पाँच तत्वों के समन्वय से बने हैं, इसलिए उनकी देखभाल करना तत्वों के सम्मान का प्रतीक है।

2. गुरुकुलों में बागवानी की शिक्षण पद्धति

2.1 अनुभवात्मक शिक्षण (Experiential Learning)

गुरुकुल शिक्षा का आधार "करके सीखो" (learning by doing) था। विद्यार्थी निम्नलिखित गतिविधियाँ स्वयं करते थे—

बीज बोना, पौधों को पानी देना, निराई-गुड़ाई, खाद तैयार करना, औषधीय पौधों की पहचान, फल और फूल की

देखभाल, वृक्षारोपण, बगीचे का रख-रखाव, इससे उनका ज्ञान केवल सैद्धांतिक नहीं बल्कि व्यावहारिक होता था।

3.2 ऋतु-चक्र आधारित शिक्षा

- गुरुकुलों में विद्यार्थियों को सिखाया जाता था—
- कौन से पौधे किस ऋतु में उगते हैं
- पौधों की वृद्धि पर सूर्य चक्र का प्रभाव
- वर्षा की भूमिका
- मिट्टी की नमी और तापमान का संबंध

यह ज्ञान आज के क्लाइमेट स्मार्ट हर्टिकल्चर का आधार है।

3.3 गुरुकुल में बागवानी के मुख्य विषय

गुरुकुल पाठ्यक्रम में बागवानी से संबंधित कई विषय शामिल थे—

1. मृदा विज्ञान – मिट्टी के प्रकार, उर्वरता, नमी
2. बीज विज्ञान – बीजों का चयन, संरक्षण
3. वनस्पति विज्ञान – पत्तियों, जड़ों, तनों का अध्ययन
4. औषधीय पौधे – तुलसी, नीम, अश्वगंधा, ब्राह्मी
5. फल विज्ञान – आम, बेर, नारियल, अनार, केला
6. फूल विज्ञान – कमल, गुलाब, चंपा, मोगरा
7. सिंचाई तकनीक – जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन
8. जैविक खाद – गोबर, खली, पत्तों की खाद

इन सब विषयों का अध्ययन आज भी बागवानी के मुख्य क्षेत्रों में शामिल है।

4. गुरुकुल में बागवानी के वैज्ञानिक तत्व

4.1 वृक्षायुर्वेद का विज्ञान

आचार्य सुश्रुत और चरक ने पौधों की औषधीय शक्ति पर विस्तार से लिखा।

“वृक्षायुर्वेद” में उल्लेख मिलता है—

- पौधों का निदान
- रोग रोकने के उपाय
- वृक्षों की वृद्धि बढ़ाने के प्राकृतिक उपाय
- सत्व (essence) और रस (sap) का अध्ययन

4.2 जैविक खेती (Organic Horticulture)

गुरुकुलों में उपयोग किए जाने वाले सभी पदार्थ— गोबर, पत्तों का कचरा, नीम, छाछ, गौमूत्र, पूरी तरह प्राकृतिक थे। यह सिद्धांत आज की ऑर्गेनिक फार्मिंग और सस्टेनेबल हर्टिकल्चर का आधार है।

4.3 जल संरक्षण तकनीक

गुरुकुलों में प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण प्राथमिक था। विद्यार्थी सीखते थे—तालाब निर्माण, कुएँ— आधारित सिंचाई, वर्षा जल संचयन, मिट्टी की नमी रोकने की तकनीक। ये पद्धतियाँ आधुनिक micro&irrigation के पूर्वज मानी जा सकती हैं।

5. गुरुकुल आधारित बागवानी का सामाजिक एवं पर्यावरणीय महत्व

गुरुकुल आधारित बागवानी का सामाजिक और पर्यावरणीय महत्व अत्यंत गहरा और बहुआयामी था। गुरुकुलों में शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि विद्यार्थियों को प्रकृति से जोड़कर जीवन के मूल सिद्धांतों को समझाने पर विशेष जोर दिया जाता था। वृक्षारोपण वहाँ की एक अनिवार्य गतिविधि थी, जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे हर वर्ष निश्चित संख्या में पेड़ लगाएँ और उनकी देखभाल करें। इस प्रक्रिया से न केवल पर्यावरण संरक्षण का संदेश मिलता था बल्कि विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और करुणा भी विकसित होती थी। जीव-जंतुओं, पौधों और प्राकृतिक संसाधनों के साथ संतुलित संबंध बनाना गुरुकुल जीवन का अहम हिस्सा था।

गुरुकुल बागवानी स्वास्थ्य और पोषण के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण थी। वहाँ औषधीय पौधों की खेती की जाती थी, जिनसे प्राकृतिक उपचार और रोग प्रतिरोधक जीवनशैली विकसित होती थी। तुलसी, आंवला, नीम, अश्वगंधा और हल्दी जैसे पौधों का उपयोग सामान्य बीमारियों के उपचार में किया जाता था, जिससे आयुर्वेदिक और जैविक चिकित्सा का प्रसार होता था। यह परंपरा आधुनिक औषधि विज्ञान के विकसित होने से बहुत पहले से मानव स्वास्थ्य के लिए योगदान दे रही थी। आत्मनिर्भरता और श्रम संस्कृति भी गुरुकुल प्रणाली का अभिन्न अंग थी। विद्यार्थी स्वयं बागवानी कार्यों में हिस्सा लेते थे—बीज बोने से लेकर फसल तैयार करने तक की पूरी प्रक्रिया वे खुद अनुभव करते थे। इससे उनमें श्रम के प्रति सम्मान, अनुशासन और व्यावहारिकता की भावना आती थी। “श्रम ही पूजा है” का सिद्धांत इसी दैनिक अभ्यास से जन्मा, जिसने जीवन को कर्मप्रधान दृष्टिकोण से देखने की प्रेरणा दी।

सामुदायिक बागवानी के माध्यम से विद्यार्थियों में सहयोग, सहभागिता और सामाजिक समरसता की भावना पनपती थी। सभी विद्यार्थी मिलकर बगीचों की देखभाल करते थे, जिससे

टीमवर्क और समन्वय जैसी क्षमताएँ विकसित होती थीं। यह सामूहिक श्रम न केवल सामाजिक एकता को मजबूत करता था, बल्कि पर्यावरणीय जिम्मेदारी का भी बोध कराता था। इस प्रकार, गुरुकुल आधारित बागवानी न केवल पर्यावरण संरक्षण का माध्यम थी, बल्कि नैतिक मूल्यों, स्वास्थ्य, आत्मनिर्भरता और सामाजिक चेतना को विकसित करने वाली शिक्षा पद्धति भी थी, जो आज के दौर में भी प्रेरणा का स्रोत है। गुरुकुलों में वृक्षारोपण एक अनिवार्य गतिविधि थी।

6. आधुनिक बागवानी शिक्षा से तुलना-

आधुनिक बागवानी में ग्रीनहाउस तकनीक, ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई, उन्नत बीज, ग्राफ्टिंग, टिशू कल्चर, फर्टिगेशन तथा बागवानी यंत्रीकरण जैसे तत्व प्रमुख हैं। इसकी कुछ समानताएँ प्राचीन गुरुकुल प्रणाली से भी देखी जा सकती हैं, जैसे प्रकृति आधारित खेती, व्यावहारिक शिक्षण, मिट्टी और पौधों की गहन समझ, जल संरक्षण और जैविक पद्धति पर बल। हालाँकि, आधुनिक बागवानी में तकनीकी उपयोग, वैज्ञानिक अनुसंधान, बाजार आधारित उत्पादन, उच्च उपज वाली किस्में तथा मशीनरी और उपकरणों का प्रयोग इसे परंपरागत पद्धति से भिन्न बनाता है। जहाँ गुरुकुल पद्धति का मूल आध्यात्मिक और पर्यावरण-केंद्रित था, वहीं आधुनिक बागवानी आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद और तकनीकी रूप से उन्नत मानी जाती है।

7. वर्तमान समय में गुरुकुल आधारित बागवानी की प्रासंगिकता

7.1 टिकाऊ कृषि के लिए आवश्यक

आज पर्यावरण प्रदूषण, रसायनों का बढ़ता उपयोग और जल संकट को देखते हुए गुरुकुल आधारित बागवानी अत्यंत प्रासंगिक है।

7.2 जैविक उत्पादों की मांग बढ़ रही है

वर्तमान में —

- ऑर्गेनिक फल,
- औषधीय पौधे,
- प्राकृतिक खाद

की मांग बढ़ रही है, जो गुरुकुल प्रणाली की मूल अवधारणाएँ थीं।

7.3 मानसिक स्वास्थ्य में योगदान

बागवानी तनाव कम करने और मानसिक सुख प्रदान करने का साधन है— गुरुकुल इस स्वास्थ्य लाभ को हजारों वर्षों पहले समझ चुका था।

7.4 नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप NEP2020 समग्र

और कौशल आधारित शिक्षा पर जोर देता है। यह दृष्टिकोण गुरुकुल प्रणाली से मेल खाता है।

8. निष्कर्ष :

गुरुकुल आधारित बागवानी प्रणाली केवल कृषि कौशल नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य, आध्यात्मिकता और जीवन मूल्यों का समन्वित रूप थी। यह प्रणाली आधुनिक बागवानी के लिए एक मजबूत वैचारिक आधार प्रदान करती है। आज जब विश्व सतत विकास, जैविक खेती और जल संरक्षण की ओर बढ़ रहा है, गुरुकुल की बागवानी पद्धति पहले से अधिक प्रासंगिक हो गई है।

समग्र रूप से देखा जाए तो गुरुकुल दृष्टिकोण बागवानी को केवल उत्पादन प्रक्रिया के रूप में नहीं बल्कि संस्कृति, स्वास्थ्य, पर्यावरण और नैतिकता से जुड़ी जीवन-शैली के रूप में प्रस्तुत करता है। यदि आधुनिक तकनीकों को गुरुकुल की प्रकृति-अनुकूल पद्धतियों के साथ जोड़ा जाए तो भारत विश्व में सतत बागवानी का नेतृत्व कर सकता है।

संदर्भ

1. चरक संहिता, आयुर्वेद साहित्य
2. सुश्रुत संहिता, औषधीय पौधों पर प्राचीन ग्रंथ
3. वराहमिहिर, बृहत्संहिता, कृषि एवं प्रकृति-ज्ञान
4. काशी कृषि शास्त्र, प्राचीन कृषि एवं बागवानी ज्ञान
5. नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (NEP), 2020
6. शर्मा, आर. भारतीय कृषि और वनस्पति परंपराएँ, 2018
7. सिंह, डी. के. हॉर्टिकल्चर इन इंडियन ट्रेडिशन, 2020



पृष्ठ 62 का शेष

संदर्भ

1. Agarwal] M-] & Whalley] J- (2015)- The 1991 reforms] Indian economic growth] and social progress- World Scientific Reference on Asia and the World Economy] 3&22- doi%https%//doi-org/10-1142@9789814578622_001
2. Ahluwalia] M- S- (2002)- Economic reforms in India since 1991% Has gradualism worked\ Journal of Economic perspectives] 16(3)] 67&88- doi%10-1257@089533002760278721
3. Boesche] R- (2003)- The first great political realist% Kautilya and his Arthashastra% Leñington Books-
4. Chakravarty] S- (1998)- Development planning% the Indian enperience- OUP Catalogue-
5. Deodhar] S- Y- (2023)- Tracing Economic Policies to Ancient Indian Economic Ethics: Indian Institute of Management Ahmedabad-
6. Desai] P-] Organisation for Economic] C-&o-] & Development- Development] C- (1970)- India% Planning for Industrialization: Industrialization and Trade Policies Since 1951% London New York% Onford UP-
7. Drekmeier] C- (1962)- Kingship and community in early India-
8. Dutt] R- C- (1906)- The Economic History of India Under Early British Rule (Vol- 1)% K- Paul] Trench] Trübner-
9. Ghoshal] U- N- (1930)- The agrarian system in ancient India- (No Title)-
10. Gireesan] K- From Self reliant Villages to a Self reliant India] K Gireesan & Jos Chathukulam-
11. Hutnyk] J- (2018)- Marñ in Calcutta- City] 22(4)] 490&509-
12. Joshi] V-] & Little] I- M- D- (1994)- India% Macroeconomics and political economy] 1964&1991% World Bank Publications-
13. Mabbett] I- W- (1964)- The Date of the Arthashtra- Journal of the American Oriental Society] 162&169-
14. Mahalakshmi] R- (2011)- Political Economy and Society in India% A Historiographical Survey- Asian Research Trends New Series] 6] 23&50-
15. Mehta] P- S- (2018)- Economic regulations] competition] and consumer protection in ancient India- The Antitrust Bulletin] 63(3)] 316&329-
16. Pingree] D- (1972)- Indian Science and Technology in the Eighteenth Century% Some Contemporary European Accounts- By Dharampal- Delhi% Impeñ India] 1971- lññ] 282 pp- Illustrations] Appendices] Bibliographical Notes- Rs- 65-00- The Journal of Asian Studies] 32(1)] 178&179-
17. Shamasastri] R- (1939)- Kautilya*s Arthasastra (trans-)- In% Mysore% Mysore Printing and Publishing House-
18. Sharma] R- S- (1991)- Aspects of political ideas and institutions in ancient India% Motilal Banarsidass Publ-
19. Venkatachalam] M-] & King] K- India-Africa Now: Changing Imaginaries and Knowledge Paradigms-

